बनाम जन

दफ़ा 292

मंटो के जीवन और लेखन पर अनूप त्रिवेदी का नाटक

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

दफ़ा-292

मंटो के जीवन और लेखन पर अनूप त्रिवेदी का नाटक

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

आवरण : मोहम्मद आरिश (फोटो : रा.ना.वि. में इसी नाटक के मंचन का)

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 40 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–65 रुपये
80 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–105 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

निर्देशक की डायरी से 4

दफ़ा-292 8

तीन ख़ामोश औरतें 21

पसे-मंजर 28

परिशिष्ट-1

दफ़ा-292 : सआदत हसन मंटो के जीवन और लघु कथाओं पर अनूप त्रिवेदी द्वारा रचित नाटक 32

परिशिष्ट-2

तकनीकी उत्कृष्टता की बुनियाद पर आधारित एनएसडी रिपर्टरी का जादुई मंटो कोलॉज 34

परिशिष्ट-3

असाधारण प्रदर्शनों से रूबरू 35

परिशिष्ट-4

15वें भारत रंग महोत्सव में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रंगमंडल द्वारा 18 जनवरी 2013 के मंचन का विवरण 36

सर्वाधिकार सुरक्षित--मंचन से पूर्व लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

निर्देशक की डायरी से

साल 2012 के आखीर तक रंगमंडल में कोई भी नया निर्देशक नहीं आया था। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रंगमंडल में बतौर कलाकार ये मेरा छठा वर्ष था, पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ था। साल में दो-तीन निर्देशकों के साथ नये नाटकों में काम करने का मौका मिल ही जाता था, मगर इस साल हम सभी कलाकारों के अंदर अजीब सी बेचैनी हो रही थी....कि क्या करें दिन भर...

तब एक दिन मैंने अपने रंगमंडल के साथी कलाकारों से बात की और एक प्रस्ताव रखा कि, जब तक कोई नया डायरेक्टर नहीं आता तब तक हम सब मिलकर खुद ही एक नाटक तैयार कर लेते हैं, मुश्किल से दस-पंद्रह दिन लगेंगे, निर्देशन मैं करूँगा। मेरे पास दो-तीन म्यूजिकल नाटक है--कैसा रहेगा? प्रस्ताव सभी को अच्छा लगा और बोले चलो इस सिलसिले में हम लोगों को अनुराधा कपूर जी (जो उस वक्त राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की निर्देशक थीं) से बात करनी चाहिए। हर्ज ही क्या है। मैं, द्वारिका दहिया, सुकुमार टुडू अनुराधा जी से मिले, अपना प्रस्ताव रखा। सबसे पहले प्रस्तावित उन संगीत से परिपूर्ण नाटकों के बारे मैने बताया जो मैं करना चाहता था.... वो सुनती रही फिर बोली 'Very Good Idea' लेकिन इन नाटकों के लिए तो तुम्हें म्यूजिशियन्स भी चाहिए होंगे....उनकी फीस बजट? कमेटी?? बगैरहा....बगैरह ....तभी मेरे मन में जो एक और विकल्प था वो उन्हें बताया कि मैं सआदत हसन मंटो की कहानियों का एक कोलाज जैसा भी तैयार कर सकता हूँ और मुझे लगता है हमें यानि रा.ना.वि. रंगमंडल को करना भी चाहिए--क्योंकि यह साल (2012) मंटो साहब की जन्म शताब्दी के रूप में भी मनाया जा रहा है, तो मैम हमारी ओर से ये मंटो साब को एक श्रद्धांजलि भी होगी। बस इतना सुनना था कि अनुराधा जी ने तुरंत 'हाँ' कह दिया और बोली मंटो मेरे भी प्रिय हैं....बहुत कुछ करने को है उनके अफसानो में....तो कब से शुरू कर रहे हो? बस अब जल्दी शुरू कर दो--मगर ये याद रखना बजट नहीं है हमारे पास लेकिन मैं सारे डिपार्टमेंट में सरकुलर भेज देती हूँ....तुम्हें जो चाहिए मिल जायेगा--Set, Props, Costumes वगैरह-वगैरह। बस इससे ज्यादा और क्या चाहिए था। हम लोगों ने ये सूचना रंगमंडल के बाकी कलाकारों को दी, सब उत्साहित थे कि चलो खाली बैठे रहने से तो अच्छा है। अगले दिन रंगमंडल के नोटिस बोर्ड पर भी लग गया हमारे इस नाटक के बारे में, बाकायदा मेरे नाम के साथ। अब सब official हो गया। 15 दिन बाद शो की तारीखें भी तय हो गईं। दो शोज होंगे-- 'In House'

सब कुछ तो तय हो गया--मगर मैं क्या करूँगा, मंटो का वो कौन सा अफसाना, कौन सी बात या वो कौन सी शक्ल, क्या??? दूर-दूर तक कोई Idea नहीं था, मगर अब करना है तो करना है, खैर ....वैसे भी मंटो के विषय में अब तक बहुत कुछ लिखा और कहा जा चुका है, उसके हक में कम खिलाफत में ज्यादा। हाँ, मैं इतना जरूर कहूँगा कि मंटो ने जो भी लिखा एक मकसद के लिए लिखा। वो नजूमी था, भविष्य दृष्टा था, उसने बँटवारे को नासूर कहा जो आज तक टीस रहा है। इस तकसीमे-वतन को तो पागलों ने भी कुबूल नहीं किया। अब मैं नया क्या करूँगा....जो अलग हो। सियाह हाशिये, तीन खामोश औरतें, पसेन्जर को मैंने इसलिए चुना इसमें मंटो की शख्सियत के तीन रंग है। इसी तरह बाकी अफसानों को भी चुना जिससे मंटो और उनके लेखन का अंदाजा लगाया जा सके। तो